डॉ॰ शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस॰ आर॰ ए॰ पी॰ कॉलेज
बारा-चकिया।

B.A. Part-II
General & Subsidiary
Hindi

Date-06-02-2023

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

मधुर मधुर मेरे दीपक जल!
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर!

सौरभ फैला विपुल धूप बन
मृदुल मोम-सा घुल रे, मृदु-तन!
दे प्रकाश का सिन्धु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल-गल
पुलक-पुलक मेरे दीपक जल!

तारे शीतल कोमल नूतन
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण;
विश्व-शलभ सिर धुन कहता मैं
हाय! न जल पाया तुझमें मिल!
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल!

जलते नभ में देख असंख्यक
स्नेह-हीन नित कितने दीपक
जलमय सागर का उर जलाता;
विद्युत से घिरता है बादल!
विहँस विहँस मेरे दीपक जल!

द्रुम के अंग हरित कोमलतम
ज्वाला को करते हृदयंगम
वसुधा के जड़ अन्तर में भी
बन्दी है तापों का हलचल;
बिखर-बिखर मेरे दीपक जल!

मेरे निस्वासों से द्रुततर,
सुभग न तू बुझने का भय कर।
मैं अंचल की ओट किये हूँ!
अपनी मृदु पलकों से चंचल
सहज सहज मेरे दीपक जल!

सीमा की लघुता का बंधन
है अनादि तू मत घड़ियाँ गिन
मैं दृग के अक्षय कोषों से-
तुझमें भरती हूँ आँसू-जल!
सहज सहज मेरे दीपक जल!

तू असीम तेरा प्रकाश चिर
खेलेंगे नव खेल निरन्तर,
तम के अणु में विद्युत-सा
अमिट चित्र अंकित करता चल,
सरल-सरल मेरे दीपक जल!

तू जल-जल जितना होता क्षय;
यह समीप आता छलनामय;
मधुर मिलन में मिट जाना तू
उसकी उज्ज्वल स्मित में घुल खिल!
मंदिर-मंदिर मेरे दीपक जल!
प्रियतम का पथ आलोकित कर!

शब्दार्थ

प्रियतम - सबसे प्रिय, परमात्मा	सौरभ - सुगंध
आलोकित - प्रकाशित	विपुल - विशाल
मृदुल - कोमल	सिंधु - सागर
अपरिमित - असीमित	पुलक - रोमांच
नूतन - नए	ज्वाला-कण - आग के कण
शलभ - पतंगा	स्नेहहीन - प्रेम रहित
सिहर - काँपना	नित - नित्य
उर - हृदय	विद्युत - बिजली

संदर्भ-प्रसंग:

प्रस्तुत कविता छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा रचित है। महादेवी ने इस कविता में प्रतीकों के सहारे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की है। प्रस्तुत कविता उसके गीत संकलन 'संधिनी' से लिया गया है। इस कविता में प्रयुक्त 'दीपक' मानवीय

एवं सद्वृत्तियों का प्रतीक बनकर आया है। दीपक कवयित्री के परोपकार, त्याग का प्रतीक है।

व्याख्या :-

महादेवी कहती है कि हे मेरे मधुर दीपक तू सदा जलकर दूसरों के लिए प्रकाश फैलाते रहो। तुम हमेशा जलते रहो और मेरे प्रियतम के पथ को आलोकित करते रहो। जलने में वेदना तो होगी किन्तु इसी त्याग और परोपकार से प्रियतम तक पहुँचना सम्भव हो पाएगा।

हे मेरे दीपक आनन्दित होकर जल, तुम धूप बनकर संसार को सौरभ मय दे। अंधकार की समाप्ति और प्रकाश हेतु तुम्हें मोम की भाँति जलना है। तुम अपने कोमल तन को जलाकर संसार को दिव्य प्रकाश देकर कल्याण करना है।

संसार के जितने नये, शीतल व कोमल पदार्थ हैं तुमसे ज्वाला के कण माँग रहे हैं। तुम्हारी जलन लेकर स्वयं ज्वलनशील बनना चाहते हैं। विश्व रूपी पतंगा इस बात से विक्षुब्ध है कि तुम्हारे साथ जलने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ। अतः तुम्हें जल कर संसार का उपकार करना है।

"आकाश में असंख्य तारे तेल-रहित होकर भी सदा जलते रहते हैं, पारावार जल से आपूरित होकर भी जलता रहता है। बादल जलमय होकर भी बिजली से जलता रहता है। कवयित्री दीपक से जलते रहने का आग्रह करती है।

हे मेरे दीपक वृक्षों के अंग अत्यंत हरित एवं कोमलांग होते हैं, वे भी ज्वाला को पूर्णतः हृदयंगम करते हैं। इस धरती के आँचल में अग्नि छिपी हुई है। दुःख एवं वेदना की ज्वाला हर जगह फैली हुई है,

हे सुभग मेरे दीपक तू मेरे विकारों की तीव्रता से बुझने का भय मत कर क्योंकि मैं अपने कोमल एवं चंचल पलकों की ओट से तुम्हारी रक्षा कर रही हूँ।

अंधकार की सीमा नहीं है परन्तु तुम्हारा प्रकाश चिर अमर है। तेरा प्रकाश सदैव अंधकार को निगलता रहेगा। तुम अंधकार के अणु-अणु में विद्युत की तरह चित्र बनाता हुआ चल। सदैव जलते रहना ही तुम्हारी नियति है। तुम मेरे प्रियतम की सुमधुर मुस्कान में घुलकर खिल और उसके साथ हुए मधुर मिलन में अपने आप को समर्पित कर दे। हे मेरे दीपक तू सदा जलता रह और मेरे प्रियतम का पथ आलोकित करता रह।

इस कविता में कवयित्री ने यह स्पष्ट किया है कि जलना तो वस्तु और

प्राणी की नियति है। जब तक एक वस्तु का विसर्जन नहीं होगा दूसरे का सर्जन सम्भव नहीं। महादेवी अपने अस्तित्व को मिटाकर संसार के अंधेरे को दूर करना चाहती हैं।

विशेष:-

सांसारिक वेदना को अंत करने हेतु स्वयं कष्ट को सहन करके आनंदप्राप्ति होती है। कवयित्री यह संदेश देती है। यह कविता त्याग और परोपकार की भावना स्थापित करने में सक्षम है। कविता प्रतीकात्मक शैली में लिखी गई। इसमें छायावाद और रहस्यवाद विचारधारा मिलती है। शैली तत्व विद्यमान है। भाषा सरल, सहज और सुबोध है।